जी . एस . घूर्ये

स्वतन्त्र भारत में समाजशास्त्रियों की प्रथम पंक्ति को विकसित करने का श्रेय घुरिये को ही दिया जाता है । एम ० एन ० श्रीनिवास ने उनको भीमकाय व्यक्ति (Giant) कहा है गोविन्द सदाशिव घुर्ये भारतीय समाजशास्त्र के पुरोधा थे । कुछ विचारको का मत है कि वे इस देश में समाजशास्त्र के जनक थे । पेट्रिक गैइस बम्बई विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र के पहले अध्यापक थे, उनके बाद घुर्ये ने समाजशास्त्र के अध्यापन की बागडोर को सँभाला । इस विधा में उन्होंने बहुत लिखा है । भारतीय समाजशास्त्रीय चिंतकों में गोविंद सदाशिव घूर्ये (जी . एस . धूर्ये : G.S.Ghurye) का नाम प्रथम स्तर पर है । इन्हें भारत में समाजशास्त्र को एक संस्थागत रूप में स्थापित करने का श्रेय दिया जाता है । इन्होंने बम्बई विश्वविद्यालय में सर्वप्रथम स्नातकोत्तर स्तर पर समाजशास्त्र विभाग की अध्यक्षता की तथा 35 वर्षों तक इस विभाग में कार्य किये।

जी . एस- घूर्ये का जन्म 12 दिसम्बर , 1893 में भारत के पश्चिमी कोकण तटीय प्रदेश के छोटे से कस्बे ' मालवान ' में हुआ था । उनका परिवार प्रारंभ में एक सम्पन्न व्यापारी था , लेकिन बाद में उसका पतन हो गया । अपने पारिवारिक परम्परा के अनुसार प्रारंभिक शिक्षा के साथ उन्होंने संस्कृत का ज्ञान प्राप्त करना प्रारंभ कर दिया । दसवीं कक्षा की पढ़ाई के के लिये गुजरात जूनागढ़ गये । 1913 में मुम्बई के एलफिस्टन कॉलेज में प्रवेश लिया । संस्कृत ऑनर्स में स्नातक की उपाधि प्राप्त की । इसी कॉलेज से 1918 में संस्कृत तथा अगेजी में स्नातकोत्तर की उपाधि ली । 1919 में समाजशास्त्र विषय में विदेश में प्रशिक्षण हेतु छात्रवृत्ति के लिये चयनित हुए । प्रारंभ में अपने समय के प्रमुख समाजशास्त्री एल . टी- हॉबहाऊस के द्वारा लंदन स्कूल ऑफ इकॉनामिक्स में पढ़ाए गए । बाद में डब्ल्यू एवं रिवर्स खिरी द्वारा कैम्ब्रिज में पढ़ाए गये । रिवर्स के प्रसारवादी दृष्टिकोण से प्रभावित हुए । 1923 में एस- सी- हैडन के निर्देशन में पी – एच . डी . की उपाधि प्राप्त की । उनकी ' कास्ट एण्ड रेस इन इंडिया ' (Caste and Race in India) पी – एच . डी . पर आधारित पांडुलिपि पर कैम्ब्रिज में पुस्तकों की एक श्रृंखला प्रकाशित करने क लिये स्वीकृत हुई । 1924 में थोडे समय तक कलकत्ता में काम करने के बाद बम्बई विश्वविद्यालय में रीडर तथा विभागाध्यक्ष के रूप में नियुक्त हुए । वहाँ 35 वर्षों तक शिक्षण व शोध कार्यों से जुड़े रहे । 1934 में वे समाजशास्त्र के प्रोफेसर बनाये गये । 1936 में उनकी अध्यक्षता में बम्बई विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग में पी- एच . डी . की उपाधि प्रारंभ की गई । भारतीय विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र में घूर्य के निर्देशन में प्रथम पी – एच . डी . उपाधि जी . आर . प्रधान को प्रदान की गई । 1945 में पूर्णकालीन कोर्स में समजाशास्त्र का पाठ्यक्रम प्रारंभ उनके निर्देशन में प्रारंभ किया गया ।

1951 में धूर्य द्वारा ' इंडियन सोशियोलॉजिकल सोसाइटी की स्थापना की गई । वे इसके संस्थापक अध्यक्ष बने । इंडियन सोशियोलॉजिकल सोसाइटी ' ने 1952 में अपने जर्नन ' सोशियोलॉजिकल बुलेटिन ' का प्रारंभ किया , जो अबतक 1959 में घूर्ये विश्वविद्यालय सेवा से निवृत्त हुए . लेकिन शैक्षणिक जीवन में क्रियाशील रहे । मुख्य रूप से 30 पुस्तकों के प्रकाशन में 17 पुस्तके उन्होंने सेवानिवृत्त होने के बाद लिखी 1983 में 90 वर्ष की आयु में घूर्य की मत्यु हो गई । घुर्ये बहुआयामी प्रतिभा के स्वामी रहे । उनके निर्देशन में अनेक एम . एन- श्रीनिवास , आई . पी . देसाई , के एम- कपाडिया , ए . आर . देसाई व बाई . बी . दामने आदि – का भारत के समाजशास्त्री के रूप में पहचान बनी । Anthropological Society of Bombay के 1945-50 तक अध्यक्ष भी रहे । घुरिये ने ' इण्डियन सोशियोलॉजिकल सोसायटी ' (Indian Sociological Society) की स्थापना की और इसके तत्त्वावधान में 1952 ई ० में ' सोशियोलॉजिकल बुलेटिन ' नामक पत्रिका का प्रकाशन भी प्रारम्भ किया जो आज भारत में ही नहीं वरन् विश्व की प्रमुख समाजशास्त्रीय पत्रिकाओं में से एक है । वे 1966 ई ० तक इसके प्रथम अध्यक्ष के रूप में कार्य करते रहे । घुरिये की कृतियों की एक लम्बी सूची है

रचनाएँ:

- Caste and Race in India (1932)
- Sex Habits of Middle Class People (1938)
- The Aborigines – 'So-called and Their Future (1943)
- Culture and Society (1945)
- After a Century and a Quarter (1960)
- Caste, Class and Occupation (1961)
- The Indian Sadhus (1964)
- Social Tensions in India (1968)
- Family and Kin in Indo–European Culture (1962)
- Cities and Civilization (1962)
- Anatomy of a Rururban Community (1963)
- The Scheduled Tribes (1963)
- The Mahadev Kolis (1963)
- Whither India (1974)
- India Recreates Democracy (1978)
- Vedic India (1979)
- The Burning Caldron of the North – East (1980)

घुरिये के लेखन को प्रमुख रूप से निम्नलिखित छह विस्तृत केन्द्र – बिन्दुओं पर आधारित माना जाता है

(1) जाति

(2) जनजाति

(3) नातेदारी , परिवार एवं विवाह

(4) संस्कृति , सभ्यता एवं नगरों की ऐतिहासिक भूमिका

(5) धर्म तथा

(6) संघर्ष एवं एकीकरण का समाजशास्त्र ।

भारतीय समाजशास्त्र में जीएस घुर्ये का योगदान

भारत के एक प्रमुख समाजशास्त्री जीएस घुर्ये ने भारतीय समाजशास्त्र के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनका काम भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं पर केंद्रित था, जिसमें जातियों और जनजातियों की नृवंशविज्ञान, ग्रामीण-शहरीकरण, धार्मिक घटनाएँ, सामाजिक तनाव और भारतीय कला शामिल हैं।

भारत में जाति और रिश्तेदारी

घुर्ये की पुस्तक " **कास्ट एंड रेस इन इंडिया** " (1932) को आज भी भारतीय जातियों पर एक महत्वपूर्ण स्रोत माना जाता है। इस कार्य में, उन्होंने ऐतिहासिक, तुलनात्मक और एकीकृत दृष्टिकोण से जाति व्यवस्था की जांच की। घुर्ये ने दो मुख्य बिंदुओं पर जोर दिया: भारत में रिश्तेदारी और जाति नेटवर्क अन्य देशों में समानता रखते थे, और रिश्तेदारी और जाति भारतीय समाज में एक एकीकृत ढांचे के रूप में कार्य करती थी। उन्होंने गोत्र और चरण के महत्व पर प्रकाश डाला, जो पिछले ऋषियों के नामों से प्राप्त रिश्तेदारी-श्रेणियाँ थीं। इन श्रेणियों ने भारतीय समाज में लोगों के पद और स्थिति को व्यवस्थित किया। घुर्ये ने शुद्धता और प्रदूषण के मानदंडों के आधार पर जातियों को एक सामूहिकता में संगठित करने में अंतर्विवाह और सहभोजिता की भूमिका पर भी चर्चा की। उन्होंने तर्क दिया कि हिंदू धर्म ने इस एकीकरण के लिए वैचारिक और अनुष्ठानिक दिशा-निर्देश प्रदान किए, जिसमें ब्राह्मणों ने पवित्र संहिताओं की अपनी व्याख्या के माध्यम से जाति के पदों और आदेशों को वैध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भारत में जाति की नई भूमिकाएँ

घुर्ये के जाति संबंधी कार्य ने भारतीय समाज में इसकी विकसित होती भूमिकाओं का भी पता लगाया। उन्होंने कहा कि भारतीय जातियों ने शिक्षा और सुधारवादी उद्देश्यों के लिए स्वैच्छिक संघों को बढ़ावा दिया, और भविष्यवाणी की कि ये संघ जाति संबंधों पर आधारित राजनीतिक चेतना को जन्म देंगे। स्वतंत्र भारत के बाद, जाति संघ वास्तव में अपने सदस्यों के लिए राजनीतिक रियायतें मांगने के बारे में मुखर हो गए हैं। घुर्ये ने बेहतर विशेषाधिकारों के लिए पिछड़े वर्गों के संघर्षों पर भी चर्चा की, जिसके बारे में उनका मानना था कि यह भारतीय समाज की एकता को कमजोर कर रहा है। उन्होंने तर्क दिया कि जातियों के बीच विशेषाधिकारों के लिए संघर्ष सामाजिक सामंजस्य को नुकसान पहुंचा रहा है और जाति व्यवस्था को बहुलवादी प्रतिस्पर्धा में बदल रहा है।

भारत में जनजातियों का अध्ययन

भारत में जनजातियों पर हुए शोधघुर्ये के काम उनके ऐतिहासिक, प्रशासनिक और सामाजिक आयामों पर केंद्रित थे। उन्होंने भारतीय जनजातियों को " **पिछड़े हिंदू** " के रूप में देखा, जो हिंदू समाज में अपूर्ण रूप से एकीकृत थे। घुर्ये ने तर्क दिया कि आदिवासी जीवन में हिंदू मूल्यों और मानदंडों को शामिल करना एक सकारात्मक विकास था, क्योंकि इससे जनजातियों ने शराब पीना छोड़ दिया, शिक्षा प्राप्त की और अपनी कृषि में सुधार किया। हालाँकि, उन्होंने पूर्वोत्तर जनजातियों के बीच अलगाववादी प्रवृत्तियों का भी दस्तावेजीकरण किया और चेतावनी दी कि ये देश की राजनीतिक एकता को नुकसान पहुँचा सकते हैं।

भारत में ग्रामीण-शहरीकरण

घुर्ये ग्रामीण-शहरीकरण की प्रक्रिया में रुचि रखते थे और तर्क देते थे कि यह भारत में केवल औद्योगिक विकास का परिणाम नहीं था। उन्होंने भारत में शहरीकरण के स्वदेशी स्रोतों पर प्रकाश डाला, जहाँ शहरी केंद्रों का विकास ग्रामीण क्षेत्रों के भीतर से ही शुरू हुआ। घुर्ये ने बताया कि कैसे कृषि के विस्तार ने ग्रामीण इलाकों में बाजारों की आवश्यकता को जन्म दिया, जिसके परिणामस्वरूप प्रशासनिक और न्यायिक संस्थानों के साथ टाउनशिप का विकास हुआ। उन्होंने अतीत में शहरी केंद्रों के विकास में सामंती संरक्षण और शाही दरबारों की मांग की भूमिका पर भी चर्चा की। पुणे जिले के एक गाँव के घुर्ये के अध्ययन ने सामाजिक संरचना की निरंतरता और व्यवहार्य इकाइयों के रूप में गाँवों के अस्तित्व पर प्रकाश डाला।

भारत में धार्मिक विश्वास और प्रथाएँ

घुर्ये ने भारतीय धार्मिक विश्वासों और प्रथाओं के अध्ययन में मौलिक योगदान दिया। उन्होंने तर्क दिया कि प्राचीन भारत, मिस्र और बेबीलोनिया में धार्मिक चेतना मंदिरों के इर्द-गिर्द केंद्रित थी, और भारतीय और मिस्र के पूजा के पैटर्न और मंदिर वास्तुकला के बीच समानताएँ थीं। घुर्ये ने भारतीय धर्म में प्रमुख देवताओं, जैसे शिव, विष्णु और दुर्गा के उदय का पता स्थानीय या उप-क्षेत्रीय मान्यताओं को पूजा की एक वृहद-स्तरीय प्रणाली में एकीकृत करने की आवश्यकता से लगाया। उन्होंने भारत में लोकप्रिय पंथों के प्रसार में राजनीतिक संरक्षण की भूमिका और कैसे गणेश उत्सव और दुर्गा उत्सव जैसे धार्मिक त्योहारों ने बीसवीं सदी में भी राजनीतिक रंग बनाए रखा, इस पर भी चर्चा की।

भारतीय परंपरा में साधु की भूमिका

अपनी रचना " **भारतीय साधु** " (1953) में, घुर्ये ने भारत में त्याग की विरोधाभासी प्रकृति की जांच की। उन्होंने हिंदू समाज में साधुओं या संन्यासियों की भूमिका पर चर्चा की, जिन्हें जातिगत मानदंडों और सामाजिक रूढ़ियों से अलग माना जाता था। घुर्ये ने इस बात पर प्रकाश डाला कि साधुओं को समाज के दायरे से बाहर माना जाता था, लेकिन उन्होंने धार्मिक विवादों के मध्यस्थ, शिक्षा के संरक्षक और धर्म के रक्षक के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने साधुओं के विभिन्न समूहों, जैसे शैव दशनामी और वैष्णव बैरागी, और हिंदू समाज में उनके योगदान का पता लगाया। घुर्ये ने तर्क दिया कि तप अतीत का अवशेष नहीं है, बल्कि वर्तमान हिंदू प्रथाओं का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जिसमें विवेकानंद, दयानंद सरस्वती और श्री अरबिंदो जैसे प्रसिद्ध तपस्वी हिंदू धर्म की बेहतरी के लिए काम कर रहे हैं।

भारतीय कला और वास्तुकला

अपनी पुस्तक " **भारतीय कला: ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में रूप, चिंताएं और विकास** " (1968) में, घुर्ये ने भारतीय कला और वास्तुकला के विभिन्न रूपों की खोज की। उन्होंने भारतीय कला की उत्पत्ति और विकास पर चर्चा की, कलात्मक अभिव्यक्तियों पर धर्म, संस्कृति और ऐतिहासिक घटनाओं के प्रभाव पर प्रकाश डाला। घुर्ये ने मूर्तिकला, चित्रकला, वास्तुकला और सजावटी कला जैसे विभिन्न कला रूपों की जांच की और उनकी शैलीगत विशेषताओं, प्रतीकवाद और सामाजिक महत्व का विश्लेषण किया। उन्होंने भारतीय कला पर विदेशी प्रभावों, जैसे मुगल

और यूरोपीय प्रभावों के प्रभाव और भारत में कलात्मक परंपराओं को कैसे आकार दिया, इस पर भी चर्चा की।

भारतीय कला और वास्तुकला पर घुर्ये के काम का उद्देश्य भारत की कलात्मक विरासत और उसके सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भ की व्यापक समझ प्रदान करना था। उन्होंने कला, धर्म और समाज के अंतर्संबंधों पर जोर दिया और बताया कि कैसे कलात्मक अभिव्यक्तियाँ भारतीय लोगों की मान्यताओं, मूल्यों और आकांक्षाओं को दर्शाती हैं।

Conclusion:

जी एस घुर्ये ने भारतीय समाजशास्त्र के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया, खासकर जाति, जनजाति, ग्रामीण-शहरीकरण, धर्म और कला के क्षेत्रों में। उनके कार्य भारतीय समाज और संस्कृति के अध्ययन में प्रभावशाली बने हुए हैं, जो भारतीय सामाजिक जीवन की जटिलताओं और गतिशीलता में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

जी एस घुर्ये सबसे प्रसिद्ध भारतीय समाजशास्त्रियों में से एक थे, जिनके योगदान ने भारतीय सामाजिक संरचनाओं और उनकी सांस्कृतिक गतिशीलता की समझ पर दूरगामी प्रभाव डाला । उन्होंने जाति, आदिवासी समुदायों, सामाजिक परिवर्तन आदि से संबंधित मुद्दों के व्यापक क्षेत्र को कवर किया, जिससे भारतीय समाजशास्त्र के निर्माण में मदद मिली। भारत के सामाजिक संगठन के बारे में उनकी अंतर्दृष्टि ने इसके बहुलवादी और जटिल सामाजिक ताने-बाने को समझने के लिए एक बुनियादी ढांचा स्थापित किया। भारत के समकालीन समाजशास्त्रीय अध्ययनों में उनका योगदान बहुत प्रभावशाली रहा है।

MCQ

1. **जी. एस. घुर्ये को भारतीय समाजशास्त्र के क्षेत्र में किस रूप में जाना जाता है?**

A. भारतीय अर्थशास्त्र के जनक

B. भारतीय समाजशास्त्र के पुरोधा

C. भारतीय राजनीति के जनक

D. भारतीय मानवशास्त्र के संस्थापक

2. **जी. एस. घुर्ये की प्रसिद्ध कृति** *Caste and Race in India* **किस विषय से संबंधित है?**

A. ग्रामीण समाज

B. भारतीय कला

C. जाति एवं नस्ल

D. धार्मिक आंदोलन

3. जी. एस. घुर्ये ने बम्बई विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग में लगभग कितने वर्षों तक कार्य किया?

A. 15 वर्ष

B. 25 वर्ष

C. 35 वर्ष

D. 45 वर्ष

4. घुर्ये के अनुसार भारतीय जनजातियों को किस दृष्टिकोण से समझा जा सकता है?

A. पृथक एवं पूर्णतः स्वतंत्र समुदाय

B. पिछड़े हिंदू

C. केवल ग्रामीण समुदाय

D. नगरीय समुदाय

5. निम्नलिखित में से कौन-सा घुर्ये के समाजशास्त्रीय अध्ययन का प्रमुख क्षेत्र था?

A. जाति

B. जनजाति

C. नातेदारी, परिवार एवं विवाह

D. उपर्युक्त सभी

Discussion – 1

जी. एस. घुर्ये के भारतीय समाजशास्त्र (जाति, जनजाति, ग्रामीण-शहरीकरण, धर्म तथा भारतीय कला एवं संस्कृति) में योगदान का आलोचनात्मक विवेचन कीजिए।

Assignment – 1

जी. एस. घुर्ये के जाति संबंधी विचारों का अध्ययन करते हुए उनकी पुस्तक *Caste and Race in India* के प्रमुख प्रतिपाद्यों को स्पष्ट कीजिए। जाति की संरचना, अंतर्विवाह, सहभोजिता, गोत्र, सामाजिक स्थिति तथा जाति के बदलते स्वरूप के संदर्भ में उनके विचारों की व्याख्या कीजिए।

Assignment – 2

जी. एस. घुर्ये के जनजातीय समाज तथा ग्रामीण-शहरीकरण संबंधी विचारों का विस्तार से अध्ययन कीजिए। भारतीय जनजातियों के हिंदू समाज से संबंध, उनके सामाजिक एकीकरण तथा भारत में ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों के विकास की प्रक्रिया के संबंध में घुर्ये के विचारों को स्पष्ट कीजिए।